ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी -काव्य पुनरावृत्ति

दिनांक—11/10/2020 साखियाँ (कबीरदास)

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुक्ता चुगैं, अब उड़ि अनत न जाहिं।1।

अर्थ :- कबीर दास जी ने अपने इस दोहे में हमें यह बताया है कि मुक्ति का मार्ग हमें केवल प्रभु-भक्ति में ही मिल सकता है और उसी से हमें परम-आनंद की प्राप्ति होगी। इसी कारण से उन्होंने उपर्युक्त दोहे में हंसों का उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो मानसरोवर के जल में क्रीड़ा करते हुए मोती चुग रहे हैं। उन्हें इस क्रीड़ा में इतना आनंद आ रहा है कि वो इसे छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते।
ठीक इसी प्रकार, अगर मनुष्य भी खुद को ईश्वर की भक्ति में लीन कर लेगा और परम मोक्ष का आनंद प्राप्त कर लेगा, तो फिर उसका ध्यान कहीं और नहीं भटकेगा। उसे प्रभु की भक्ति में मिलने वाला आनंद और कहीं नहीं मिलेगा। फिर वह प्रभु की भक्ति में ही मग्न रहेगा और इस मार्ग को छोड़कर कहीं और नहीं जायेगा।
~~~~~~~~~~

कठिन शब्दार्थ :

क्रीडा - खेल

प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ।2।

अर्थ :- प्रस्तुत साखियों में संत कबीर दास जी ने संसार में सच्चे भक्तों की कमी के बारे में बताया है। जो व्यक्ति प्रभु की सच्ची भक्ति करता है, वह कभी भी दूसरे मनुष्य को उसकी जात, धर्म या काम के लिए नीचा नहीं समझता। वह सभी मनुष्यों को सामान भावना से देखेगा और हर मनुष्य से एक समान प्रेम करेगा।
कवि के अनुसार, जब दो सच्चे प्रभु-भक्त आपस में मिलते हैं, तो उनके बीच कोई भेद-भाव, ऊँच-नीच, क्लेश इत्यादि (विष जैसी) बुरी भावनाएं नहीं होतीं। साथ ही, जब दो सच्चे भक्त एक-दूसरे से मिलते हैं, तो नीची जात, दूसरे धर्म का व्यक्ति या अछूत व्यक्ति भी प्रेम का पात्र बन जाता है। इस तरह पाप भी पुण्य में परिवर्तित हो जाता है, लेकिन आज की दुनिया में दो सच्चे भक्तों का मिलन होना बहुत ही दुर्लभ है।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ , सहज दुलीचा डारि ।

स्वान रूप संसार है , भूँकन दे झख मारि।3।

अर्थ :- कबीरदास जी कहते हैं कि यदि सवारी ही करनी है तो ज्ञान रुपी हाथी पर सहजता का दुलीचा (गद्दा) डालकर चढ़ो और कुत्तों (छींटाकशी करनेवालों) के भौंकने की परवाह किए बिना शान से सवारी करो । तात्पर्य यह कि हमें ज्ञानी बनना चाहिए पर हमारे अन्दर विनम्रता का होना बहुत आवश्यक है। इसके अभाव में ज्ञान व्यर्थ - सा हो जाता है । ज्ञानी को लोगों के कुछ कहने या बातों की परवाह किए बिना अपना कर्तव्य करना चाहिए।

धन्यवाद **कुमारी पिंकी "कुसुम"**